पहलवान की ढोलक

लेखक : संज्ञा फणीश्वर नाथ रेणु

<u>पाठ का सार</u> :- जाड़े के दिन हैं। अमावस की रात है। गाँव में मलेरिया और हैज़ा फैला है। महामारी के कारण गाँव में सन्नाटा फैला है। अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही है। आकाश में तारे चमक रहे हैं। पृथ्वी पर अंधेरा है। आकाश से कोई भावुक तारा टूट कर पृथ्वी की तरफ आता है। उसकी शक्ति और ज्योति रास्ते में ही खत्म हो जाती है। आकाश में चमकने वाले और तारे, ऐसे लगता है जैसे, भावुक तारे का मजाक उड़ा रहे हों।

सियारों का क्रंदन और पेचक की डरावनी आवाज कभी-कभी गाँव की शांति भंग करती है। गाँव की झोपड़ियों से कराहने और कै करने की आवाज़ सुनाई देती है या कोई बच्चा कमजोर आवाज में माँ-माँ पुकारता है।

इस भीषण रात्रि की भीषणता को पहलवान की ढोलक की आवाज़ ताल ठोक कर ललकार रही है, जो संध्याकाल से प्रातःकाल तक लगातार बजती है। ढोलक की आवाज़ गाँव वालों के लिए संजीवनी शक्ति का काम करती है।

लुट्टन सिंह पहलवान जब नौ वर्ष का था, तभी उसके माता पिता की मृत्यु हो गई थी। पर लुट्टन की किस्मत अच्छी थी। उसके माता-पिता उसका विवाह कर गए थे। विधवा सास ने ही उसे पाला पोसा। गाँव के लोग लुट्टन की सास को तरह-तरह से तंग करते थे। लोगों से बदला लेने के लिए लुट्टन ने कसरत सीखना शुरू कर दिया। जवानी में कदम रखते ही लुट्टन अच्छा पहलवान समझा जाने लगा। लोग उससे डरने लगे। वह अपने दोनों हाथों को 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर चलता।

एक बार लुट्टन श्याम नगर दंगल देखने गया। वहाँ अनेक पहलवानों को हरा चुके शेर के बच्चे अर्थात् चाँद सिंह को उसने कुश्ती के लिए ललकारा और उसे हरा दिया। श्याम नगर के राजा ने उसे दरबारी पहलवान नियुक्त कर दिया।

दरबारी पहलवान बनकर वह केवल प्रदर्शन की चीज बनकर रह गया। उसके दो पुत्र थे, जिन्हें माना जा रहा था कि वही दरबार के भावी पहलवान होंगे। लुट्टन हर रोज ढोलक बजा-बजाकर अपने लड़कों को कसरत कराता और उन्हें बोलता - ढोलक का हमेशा सम्मान करना और इसे अपना गुरु समझना। ये ढोलक मेरी भी गुरु है। इसके अतिरिक्त लुट्टन कब, कैसा व्यवहार करना चाहिए आदि की शिक्षा भी वह अपने पुत्रों को देता।

लुट्टन की दी शिक्षा बेकार चली गई, क्योंकि वृद्ध राजा की मृत्यु हो गई। राजकुमार विलायत से आए और राज्य अपने हाथ में ले लिया। राज्य में अनेक परिवर्तन हुए। खेलों में दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। पहलवान को कह दिया गया कि अब राज दरबार में उसकी आवश्यकता नहीं है।

पहलवान अपने दोनों पुत्रों के साथ गाँव आ गया। गाँव के एक छोर पर गाँव के लोगों ने उसे झोपड़ी बना दी। शुरू में गाँव के नौजवान उससे कुश्ती सीखने आते, परंतु धीरे-धीरे उन्होंने आना बंद कर दिया। लुट्टन अपने लड़कों को ही कुश्ती करवाता। पहलवान के दोनों लड़के मजदूरी भी करते, क्योंकि उनके द्वारा लाए पैसों से ही घर चलता।

गाँव में पहले अनावृष्टि और फिर गाँव में मलेरिया व हैज़ा महामारी के रूप में फैल गया। गाँव के अनेक लोगों की मृत्यु हो गई। कई लोग गाँव छोड़कर चले गए। गाँव सूना हो गया। सूर्य के प्रकाश में लोग एक दूसरे के घर जाते और सांत्वना देते, पर सूर्यास्त होते ही गाँव में सन्नाटा छा जाता। सुनाई देती तो केवल पहलवान की ढोलक की आवाज़। ढोलक की आवाज़ लोगों के लिए संजीवनी शक्ति थी। एक दिन पहलवान के दोनों पुत्र महामारी के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए। लुट्टन पहलवान अपने दोनों पुत्रों को नदी में बहा आया।

रात को ढोलक की आवाज़ प्रतिदिन की भाँति सुनाई दी। दुखी गाँव वाले कहने लगे - पहलवान का डेढ़ हाथ का कलेजा है।

चार-पाँच दिन के बाद एक दिन रात को ढोलक की आवाज़ सुनाई नहीं दी। प्रातःकाल पहलवान के शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश चित पड़ी थी। जो लुट्टन पहलवान जिंदगी में कभी किसी से चित नहीं हुआ था अर्थात् हारा नहीं था, मृत्यु ने उसे चित कर दिया था।

VASUNDHARAHINDI.COM

पठित **गद्यांश**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए :-

(1)

वह कहा करता था - 'लुट्टन सिंह पहलवान को होल इंडिया भर के लोग जानते हैं', उसके लिए 'होल इंडिया' की सीमा शायद एक जिले की सीमा के बराबर ही हो। जिले भर के लोग उसके नाम से अवश्य परिचित थे।

लुट्टन के माता-पिता उसे नौ वर्ष की उम्र में ही अनाथ बनाकर चल बसे थे। सौभाग्यवश शादी हो चुकी थी, वरना वह भी माँ-बाप का अनुसरण करता। विधवा सास ने पाल-पोस कर बड़ा किया। बचपन में वह गाय चराता, धारोष्ण दूध पीता और कसरत किया करता था। गाँव के लोग उसकी सास को तरह-तरह की तकलीफ दिया करते थे। लुट्टन के सिर पर कसरत की धुन लोगों से बदला लेने के लिए ही सवार हुई थी। नियमित कसरत ने किशोरावस्था में ही उसके सीने और बाहों को सुडौल और माँसल बना दिया था। जवानी में कदम रखते ही वह गाँव में सबसे अच्छा पहलवान समझा जाने लगा। लोग उससे डरने लगे और वह दोनों हाथों को दोनों ओर 45 डिग्री की दूरी पर फैलाकर पहलवानों की भाँति चलने लगा। वह कुश्ती भी लड़ता था।

प्रश्न 1) लुट्टन का लालन-पालन उसकी सास ने क्यों किया?

उत्तर : लुट्टन के माता पिता का देहांत तभी हो गया, जब वह नौ वर्ष का ही था। क्योंकि उसका विवाह हो गया था, इसलिए उसका लालन-पालन उसकी सास ने किया।

प्रश्न 2) लुट्टन ने पहलवानी क्यों शुरू की?

उत्तर : गाँव के लोग उसकी विधवा सास को तरह-तरह से तकलीफ दिया करते थे। लोगों से बदला लेने के लिए उसने पहलवानी शुरु की।

प्रश्न 3) लुट्टन बचपन में कौन से काम करके बड़ा हुआ?

उत्तर : लुट्टन बचपन में गाय चरा कर,के धारोष्ण दूध पी कर और कसरत करके बड़ा हुआ।

प्रश्न 4) 'लुट्टन सिंह पहलवान को होल इंडिया भर के लोग जानते हैं'। लुट्टन के अनुसार इस कथन का क्या आशय है?

उत्तर : लुट्टन के अनुसार 'होल इंडिया' का आशय था कि उसे सारे जिले के लोग जानते हैं।

(2)

एक बार वह दंगल देखने श्याम नगर मेला गया। पहलवानों की कुश्ती और दाँव-पेंच देखकर उससे रहा नहीं गया। जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती हुई आवाज ने उसकी नसों में बिजली उत्पन्न कर दी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे दंगल में शेर के बच्चे को चुनौती दे दी।

शेर के बच्चे का असल नाम था चाँद सिंह। वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ पंजाब से पहले-पहल श्यामनगर मेले में आया था। सुंदर जवान, अंग प्रत्यंग से सुंदरता टपक पड़ती थी। तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठों को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टाइटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लँगोट लगाकर एक अजीब किलकारी भर कर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान पहलवान उससे लड़ने की कल्पना से भी घबराते थे। अपनी टाइटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए ही चाँद सिंह बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।

प्रश्न क) लुट्टन को किसने कुश्ती लड़ने के लिए प्रेरित किया?

उत्तर : श्याम नगर के मेले में पहलवानों की कुश्ती, उनके दाँव-पेंच और ढोल की आवाज सुनकर लुट्टन कुश्ती लड़ने के लिए प्रेरित हुआ।

प्रश्न ख) 'शेर का बच्चा' किसे कहा गया है?

उत्तर : पंजाब के पहलवान चाँद सिंह को 'शेर का बच्चा' कहा गया है। उसने पंजाबी, पठानी पहलवानों को कुश्ती में हराकर यह टाइटिल प्राप्त किया था।

प्रश्न ग) 'शेर का बच्चा' किस प्रकार चुनौती देता था?

उत्तर : 'शेर का बच्चा' दंगल के मैदान में लँगोट लगाकर, एक अजीब सी किलकारी भरकर और छोटी दुलकी चाल से चलकर और बीच-बीच में शेर की तरह दहाड़ कर लोगों को दंगल के लिए चुनौती देता था।

प्रश्न घ) लुट्टन की नसों में बिजली किसने उत्पन्न कर दी?

उत्तर : जवानी की मस्ती और ढोल की ललकारती आवाज ने लुट्टन की नसों में बिजली उत्पन्न कर दी।

(3)

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस खयाल से ढोलक बजाता हो, किंतु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पश्य विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन-शक्ति-शून्य-स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी। अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों में आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

प्रश्न 1) किस विभीषिका की बात की गई, जिसे पहलवान की ढोलक ललकारती थी?

उत्तर : महामारी के कारण गाँव में सन्नाटा है, जो रात्रि के समय भीषण रूप ले लेता है। उसी रात्रि की विभीषिका की बात की गई है। पहलवान की ढोलक इसी विभीषिका को ललकारती, चुनौती देती रहती है।

प्रश्न 2) ढोलक की आवाज़ संजीवनी शक्ति का काम किन पर करती है?

उत्तर : ढोलक की आवाज महामारी से बीमार, अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पश्य विहीन प्राणियों के लिए संजीवनी शक्ति का काम करती है।

प्रश्न 3) ढोलक की आवाज सुनकर लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता था?

उत्तर : ढोलक की आवाज सुनकर लोगों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता,। स्पंदन-शक्ति-शून्य-स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती। मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती, मृत्यु से वे डरते नहीं थे।

प्रश्न 4) महामारी फैलने पर पहलवान किस समय ढोलक बजाता था?

उत्तर : महामारी फैलने पर पहलवान संध्या समय से सुबह होने तक ढोलक बजाता था।

VASUNDHARAHINDI.COM

(4)

उस दिन पहलवान ने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहन ली। सारे शरीर में मिट्टी मल कर थोड़ी कसरत की, फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। लोगों ने सुना तो दंग रह गए। कितनों की हिम्मत टूट गई।

किंतु, रात में फिर पहलवान की ढोलक की आवाज़, प्रतिदिन की भाँति सुनाई पड़ी। लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। संतप्त पिता-माताओं ने कहा - 'दोनों पहलवान बेटे मर गए, पर पहलवान की हिम्मत तो देखें, डेढ़ हाथ का कलेजा है।'

चार-पाँच दिनों के बाद, एक रात को ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। ढोलक नहीं बोली। पहलवान के कुछ दिलेर, किंतु रुग्ण शिष्यों ने प्रातःकाल जाकर देखा - पहलवान की लाश चित पड़ी है।

आँसू पोंछते हुए एक ने कहा - 'गुरु जी कहा करते थे कि जब मैं मर जाऊँ तो चिता पर मुझे चित नहीं, पेट के बल सुलाना। मैं जिंदगी में कभी चित नहीं हुआ और चित सुलाने के समय ढोलक बजा देना।' वह आगे बोल नहीं सका।

प्रश्न क) पहलवान ने अपने दोनों पुत्रों का किस प्रकार अंतिम संस्कार किया?

उत्तर : पहलवान ने राजा श्यामानंद का दिया हुआ रेशमी जाँघिया पहना, सारे शरीर में मिट्टी लगाई, थोड़ी कसरत की, इसके बाद पहलवान ने अपने दोनों लड़कों को अपने कंधों पर लादा और नदी में बहा आया।

प्रश्न ख) लोगों ने क्यों कहा - पहलवान का कलेजा डेढ़ हाथ का है?

उत्तर : दोनों पुत्रों की मृत्यु हो जाने पर भी संध्या होते ही पहलवान ने लोगों को हिम्मत देने के लिए ढोलक बजाई। इसीलिए लोग कहने लगे कि पहलवान का कलेजा डेढ़ हाथ का है।

प्रश्न ग) एक रात ढोलक क्यों सुनाई नहीं पड़ी?

उत्तर : पहलवान की मृत्यु हो गई थी। इसलिए पहलवान की ढोलक सुनाई नहीं दी।

प्रश्न घ) पहलवान की मृत्यु के बारे में क्या इच्छा थी?

उत्तर : पहलवान की इच्छा थी कि जब उसको चिता पर लिटाया जाए तो चित नहीं, बल्कि पेट के बल लिटाया जाए, क्योंकि वो जिंदगी में कभी चित नहीं हुए। पहलवान ये भी चाहते थे जब चिता जलाई जाए, उस समय ढोलक बजाई जाए।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1) कुश्ती के समय ढोल की आवाज और लुट्टन के दाँव-पेंच में क्या तालमेल था? पाठ में आए ध्वन्यात्मक शब्द और ढोल की आवाज आपके मन में कैसी ध्वनि उत्पन्न करते हैं? उन्हें शब्द दीजिए।

उत्तर : लुट्टन के लिए ढोल उसका गुरु था। ढोल की प्रत्येक थाप उसे संदेश देती लगती थी, उसे कुश्ती के दाँव-पेंच की प्रेरणा देती थी। जैसे ढोल के ध्वन्यात्मक शब्द सुनकर लुट्टन ने उसका कुछ इस प्रकार अर्थ निकाला :-

चट-धा, गिड-धा - आ जा, भिड़ जा।

चटाक-चट्-धा - उठाकर पटक दे।

ढाक्-धिना - वाह पट्ठे।

चट-गिड-धा - मत डरना।

धाक-धिना-तिरकट-तिना - दाँव काटो-बाहर हो जा।

धिना-धिना, धिक-धिना - चित करो।

ढोल के ध्वन्यात्मक शब्द हमारे अंदर उत्साह का संचार करते हैं, हमारे पैर अपने-आप थिरकने लगते हैं।

प्रश्न 2) कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर : लुट्टन के जीवन में निम्नलिखित परिवर्तन आए :-

- नौ वर्ष की उम्र में उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। लुट्टन की सास ने उसका पालन-पोषण किया।
- श्याम नगर के मेले में दंगल में चाँद सिंह (शेर का बच्चा) को हराया और श्याम नगर का दरबारी पहलवान बन गया
- पंद्रह वर्ष बाद राजा की मृत्यु हो गई। राजकुमार ने राजा बनते ही पहलवान को उसके पद से हटा दिया।
- लुट्टन गाँव आ गया और उसके लड़कों को जीवनयापन के लिए मजदूरी करनी पड़ी।
- गाँव में महामारी फैल गई। पहले उसके पुत्रों की मृत्यु हो गई। उसके चार-पाँच दिन बाद पहलवान लुट्टन सिंह भी चल बसा।

उसने अपने जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखे।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 3) पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं, यह ढोल है?

उत्तर : लुट्टन ने पहलवानी किसी उस्ताद या गुरु से नहीं सीखी थी, बल्कि ढोलक की आवाज सुन-सुनकर पहलवानी सीखी। जब लुट्टन ने चाँद सिंह पहलवान को हराया, तब भी ढोल की आवाज ने ही उसे प्रेरणा दी। दरबारी पहलवान बनकर वो हर रोज अपने पुत्रों को पहलवानी सिखाता, तो बोलता - 'पहलवानी करते समय ढोलक की हर ध्वनि को ध्यान से सुनना। मेरा गुरु और कोई नहीं, यह ढोलक ही है। इसे तुम भी अपना गुरु समझना।'

प्रश्न 4) गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहांत के बावजूद पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर : गाँव में महामारी फैली थी। गाँव में रात होते ही सन्नाटा हो जाता था। रात्रि की विभीषिका को ढोलक की आवाज़ चुनौती देती। ढोलक की आवाज़ बीमार व्यक्तियों के लिए संजीवनी शक्ति का काम करती। ढोलक की आवाज़ उनमें जोश भरती, बीमारी से लड़ने का उत्साह भरती। इसीलिए दोनों पुत्रों की मृत्यु हो जाने पर भी पहलवान ढोलक बजाता रहा।

प्रश्न 5) ढोलक की आवाज़ का पूरे गाँव पर क्या असर होता था?

उत्तर : ढोलक की आवाज गाँव के अर्द्धमृत, औषधि-उपचार-पश्य विहीन लोगों में संजीवनी शक्ति भरती। ढोलक की आवाज सुनते ही बच्चे, बूढ़े और जवानों की आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता और उनके स्नायुओं में बिजली दौड़ जाती। मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ नहीं होती, अर्थात् मृत्यु से वो डरते नहीं थे।

प्रश्न 6) महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर : सूर्योदय होते ही काँखते-कूँखते-कराहते लोग अपने घरों से बाहर आते तथा अपने पड़ोसियों और आत्मीयों को ढाढ़स देते। सूर्योदय के समय लोगों के मुख पर कुछ चमक नजर आती।

सूर्यास्त होते ही लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते, कोई चूँ भी नहीं करता। लोगों के बोलने की शक्ति चली जाती। यहाँ तक कि माँ अपने दम तोड़ते बच्चे को अंतिम बार बेटा कह कर पुकार भी नहीं पाती। रात्रि की विभीषिका को केवल पहलवान की ढोलक ललकारती चुनौती देती लगती।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 7) कुश्ती या दंगल पहले लोगों और राजाओं का प्रिय शौक हुआ करता था। पहलवानों को राजा एवं लोगों के द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था।

क) ऐसी स्थिति अब क्यों नहीं है?

ख) इनकी जगह अब किन खेलों ने ले ली है?

ग) कुश्ती को फिर से लोकप्रिय खेल बनाने के लिए क्या-क्या कार्य किए जा सकते हैं?

उत्तर : **क)** दंगल को पुराना खेल माना जाता है। पुराने समय के राजा व लोग दंगल का शौक रखते थे। आज पश्चिमी देशों के कई खेलों का आगमन हो गया है, इसीलिए दंगल को अब पहले जैसा सम्मान नहीं मिल रहा।

ख) दंगल के स्थान पर आधुनिक खेलों जैसे क्रिकेट, हॉकी, टेनिस, बैडमिंटन आदि ने जगह ले ली है।

ग) कुश्ती को लोकप्रिय बनाने के लिए दंगल के मुकाबले होने चाहिए। पहलवानों को उचित सम्मान दिया जाए। राष्ट्रीय खेलों में दंगल को स्थान दिया जाए। मीडिया पर इन खेलों का उचित प्रकार से प्रचार किया जाए।

प्रश्न 8) 'आकाश से टूट कर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता, तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिला कर हँस पड़ते थे।' उक्त कथन का आशय स्पष्ट करो।

उत्तर : महामारी से पीड़ित लोगों के दुख से दुखी होकर कोई भावुक तारा आकाश से टूटकर पृथ्वी की तरफ आता, तो आकाश से पृथ्वी की दूरी अधिक होने के कारण बीच में ही उसकी रोशनी खत्म हो जाती। आकाश में चमकते हुए अन्य स्थिर तारे ऐसे लगते, जैसे वे भावुक तारे की असफलता पर हँस रहे हो।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 9) पाठ में अनेक स्थानों पर प्रकृति का मानवीकरण किया गया है। पाठ में से ऐसे अंश चुनिए और उनका आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मानवीकरण से युक्त अंश व उनका आशय :-

क. अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी।

रात का मानवीकरण किया गया है। ठंड की रात होने के कारण ओस पड़ती है। ओस की बूँदें आँसू जैसी लग रही हैं। गाँव वालों के दुख से दुखी होकर रात्रि रूपी स्त्री आँसू बहा रही है।

ख. तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिला कर हँस रहे हैं।

आकाश के तारों का मानवीकरण किया गया है। गाँव वालों के दुख से दुखी होकर अगर कोई भावुक तारा पृथ्वी की तरफ आता, तो रास्ते में ही उसकी शक्ति अथवा रोशनी खत्म हो जाती। उसकी इस असफलता पर अन्य तारे खिलखिला कर हँस देते।

प्रश्न 10) लुट्टन सिंह और चाँद सिंह की कुश्ती में किसे समर्थन मिल रहा था और क्यों?

उत्तर : लुट्टन सिंह और चाँद सिंह की कुश्ती में चाँद सिंह को समर्थन प्राप्त था, क्योंकि चाँद सिंह प्रसिद्ध पहलवान था। कई अन्य पहलवानों को हराकर उसने 'शेर के बच्चे' की उपाधि भी पा ली थी। जबकि लुट्टन को कोई नहीं जानता था। वह अचानक ही दंगल में कूद पड़ा था।

प्रश्न 11) पहलवान लुट्टन सिंह को राजा साहब की कृपा दृष्टि कब प्राप्त हुई? वह उन सुविधाओं से कैसे वंचित हो गया?

उत्तर : पहलवान लुट्टन सिंह को राजा साहब की कृपा दृष्टि चाँद सिंह पहलवान को हराने के बाद प्राप्त हुई। राजा साहब ने उसे दरबारी पहलवान बना दिया। राजा की मृत्यु के बाद जब उसके बेटे ने राजकाज संभाला, तब उसने लुट्टन को दरबार से निकाल दिया, क्योंकि राजा के पुत्र को दंगल पसंद नहीं था। उसे घुड़दौड़ पसंद थी।

प्रश्न 12) पहलवान लुट्टन सिंह के सुख चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर : वृद्ध राजा के शासनकाल में पहलवान लुट्टन सिंह के सुख चैन भरे दिन थे। लुट्टन मेले में घुटने तक लंबा चोगा पहनकर, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँध कर मतवाले हाथी की तरह झूमते हुए चलता। हलवाई की दुकान पर वो नाश्ते में दो सेर रसगुल्ले खा जाता। आठ- दस गिलोरियाँ मुँह में ठूँस कर, अबरख का चश्मा लगाकर अजीब सा हुलिया बना कर दरबार वापस लौटता। शरीर उसका वृद्धि के साथ, पर बुद्धि उसकी बच्चे जैसी थी। अर्थात् राजा के दरबारी पहलवान के रूप में वह सुख चैन भरा जीवन जीता।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 13) लुट्टन के राज पहलवान बन जाने के बाद की दिनचर्या पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : लुट्टन पहलवान प्रातः काल ढोलक बजा बजाकर अपने दोनों पुत्रों को कसरत कराता। दोपहर में लेटे-लेटे दोनों को सांसारिक ज्ञान की शिक्षा देता और कहता - ढोलक की आवाज पर पूरा ध्यान देना। दंगल में उतरते समय पहले ढोलों को प्रणाम करना। वो पुत्रों को बताता कि मालिक को कैसे खुश रखा जाता है। वह पुत्रों को यह शिक्षा भी देता कि कब, कैसा व्यवहार करना चाहिए।

अर्थात् लुट्टन खाता, पीता, अपने बच्चों को शिक्षा देता और आराम करता।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM